“गीतांजलि श्री के कथा-साहित्य में युग-यथार्थ”

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा
की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

संकाय-मानविकी
विषय-हिन्दी

शोध निर्देशक

प्रो० (डॉ०) चन्द्रभानु प्रसाद सिंह
प्राचार्य एवं पूर्व विभागाध्यक्ष
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधार्थी

कंचन रजक
पैट क्रमांक- E2209065
पिता– संतोष रजक
ग्राम– बड़ी मिसिया, पो०+थान– सरमेरा
जिला– नालंदा (बिहार)

शोध का शीर्षक :– **गीतांजलि श्री के कथा-साहित्य में युग-यथार्थ**

- **प्रस्तावना** :–

हिंदी के समकालीन लेखन में गीतांजलि श्री एक सुपरिचित नाम है। उनका जन्म 12 जून 1957 को उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जनपद में हुआ। वैसे उनका परिवार मूल रूप से गांजीपुर (उत्तर प्रदेश) जनपद के गोडउर गाँव का रहने वाला है। उन्होंने दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज से स्नातक और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से इतिहास में एम०ए० किया। महाराज सायजी राव विवि, वडोदरा से 'प्रेमचंद और उत्तर भारत के औपनिवेशिक शिक्षित वर्ग' विषय पर शोध की उपाधि प्राप्त की। कुछ दिनों तक जमिया मिल्लिया इस्लामिया विवि में अध्यापन के बाद सूरत के सेंटर फॉर सोशल स्टडीज में पोस्ट डॉक्टोरल रिसर्च के लिए गई। वहीं रहते हुए उन्होंने कहानियाँ लिखनी शुरू की। उनके लेखन का आरंभ बीसवीं सदी के अस्सी के दशक से हुआ। उनकी पहली कहानी 'बेलपत्र' 1987 में 'हंस' में प्रकाशित हुई। यह समय भारत के साथ–साथ संपूर्ण विश्व के लिए महत्त्वपूर्ण है। भूमंडलीकरण की ओट में नव पूँजीवाद का उदय हुआ। भारत भूमि में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का अबाध प्रवेश होने लगा। इसको साथ ही पश्चिम की पतनोन्मुख संस्कृति का भी प्रवेश होने लगा। जीवन-दृष्टि यूरोप केन्द्रित होने लगी। अकेलापन और संत्रास नियति हो गई। आधुनिकतावाद का नव-प्रसार हुआ। इसी परिप्रेक्ष्य में गीतांजलि का लेखन होता है।

इक्कसवी सदी के प्रथम दशक में समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में जिन महिला कथाकारों ने अपनी अलग पहचान बनाई है जिनमें गीतांजलि श्री का नाम भी विशेष उल्लेखनीय है। आधुनिक हिंदी कथा साहित्य की अप्रतिम रचनाकार गीतांजलि श्री ने अपनी सृजनात्मक रचनाओं द्वारा कथा साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। उनका समस्त साहित्य समाज के बुनियादी अधिकारों के साथ उनके अधिकारों को सहज सरल प्रस्तुत करता है। गीतांजलि श्री कथा साहित्य के कथ्य एवं शिल्प को बेहद बारीकी के साथ प्रस्तुत करती है। वे बेबाकी से अपनी बात कहती और लिखती है। वे अपने लेखन में किसी

भी पारम्परिक विचारधारा से बंधती नहीं हैं। उन्होंने अपनी लेखनी में वैचारिक चिंतन के विभिन्न आयामों के साथ-साथ स्त्री जीवन को गहनता से प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में व्यष्टि एवं समष्टि का पूर्ण रूप से विचार किया है और उसे अपने कथा साहित्य में अभिव्यक्त भी किया है। गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, सांप्रदायिक एवं मनोवैज्ञानिक आयामों पर चिंतन एवं सृजन परिलक्षित होती है। इन स्थानों में अपने समय के बदलते परिवेश का प्रमाणित चित्रण हुआ है।

गीतांजलि श्री हिंदी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा पर भी समान रूप से अधिकार रखती हैं। इनकी पहली रचना 'बेलपत्र' कहानी हंस पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। गीतांजलि श्री की अब तक पांच उपन्यास और पांच कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके है। इनकी कई रचनाओं का अनुवाद अंग्रेजी और अन्य यूरोपियन भाषाओं में हुआ है। अपने लेखन के लिए गीतांजलि श्री कई सम्मानों से सम्मानित भी की गई हैं।

गीतांजलि श्री का पहला उपन्यास 'माई' सन् 1993 में प्रकाशित हुआ है। जिसमें उत्तर प्रदेश के एक छोटे से शहर के मध्यवर्गीय परिवार की गाथा है। उपन्यास की प्रधान नायिका माई है। माई का चरित्र उदात्त एवं उदार है। माई की स्वयं की अपनी कोई इच्छा एवं आकांक्षा नहीं है। माई का अस्तित्व के संघर्ष के साथ-साथ इस उपन्यास में नई पीढ़ी का पुरानी पीढ़ी के साथ मतभेद को भी दिखाया गया है।

गीतांजलि श्री का दूसरा उपन्यास 'हमारा शहर उस बरस' सन् 1998 में प्रकाशित हुआ है जिसमें सामाजिक एवं सांप्रदायिक वैमनस्य का चित्रण है। मठ और विश्वविद्यालय ये दोनों संस्थाएं सांप्रदायिकता को हवा देती हैं। इसमें हिंदू और मुस्लिम सम्प्रदायों में दंगे होते हैं। विश्वविद्यालय विद्या और संस्कारों का घर लेता है लेकिन इस उपन्यास में विश्वविद्यालयों के राजनीतिक और जातीय संघर्ष को बेहद मार्मिकता के साथ चित्रित किया है। शरद, हनीफ़ तथा उसकी पत्नी श्रुति के माध्यम से इस उपन्यास में वैचारिक संघर्ष की प्रस्तुति हुई है।

गीतांजलि श्री का उपन्यास 'तिरोहित' सन् 2001 में प्रकाशित हुआ है जिसमें ललना और चच्चो के माध्यम से मानवीय विभीषिका के साथ कटु जीवन के दर्शन होते हैं। इसमें नारी की मनः चेतना

एवं उसके अस्तित्व के संघर्ष को दिखाया गया हैं। इसमें छत का वर्णन है, साथ ही साथ लेबरनम हाऊस में रहने वाले मजदूरों की मानसिक अवस्थाओं का चित्रण है।

गीतांजलि श्री का उपन्यास 'खाली जगह' सन् 2006 में प्रकाशित हुआ है इसमें ऐसे तत्व हैं जो हमारे रोजमर्रा की जिंदगी में समा गए हैं। बम इस उपन्यास का केंद्रीय रूपक है जो जन सामान्य की चेतना को झुलसाकर रख देता है। इसमें आतंकवाद एवं हिंसा के समसामयिक प्रश्न पर दृष्टिपात किया गया है। बम विस्फोट में मारे गए एक छात्र के अभिभावक (मात-पिता) को उस स्थान पर तीन साल का बच्चा मिलता है। वह बच्चा बम विस्फोट में मारे गए बच्चे की खाली जगह भरता है। इस उपन्यास का अंग्रेजी अनुवाद 'द एमप्टी स्पेस' नाम से प्रकाशित हुआ है।

गीतांजलि श्री का पांचवा उपन्यास 'रेत समाधि' सन् 2018 में प्रकाशित हुआ, इसका अंग्रेजी अनुवाद 'टूम ऑव सैंड' नाम से हुआ हैं। इस उपन्यास के अनुवाद को अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार 2021 से सम्मानित किया गया है। 'रेत समाधि' एक महागाथा है जिसमें हर असाधारण स्त्री में छुपी एक साधारण स्त्री की महागाथा है। इसमें संयुक्त परिवार की तत्कालीन स्थिति, देश के हालात और सामान्य मानवीय नियति का विलक्षण चित्रण है और साथ में है एक अमर प्रेम प्रसंग एवं रोज़ी जैसी अविस्मरणीय पात्र। यह उपन्यास पीठ, धूप और हद-सरहद इन तीन सर्गों में विभक्त है। पहले सर्ग में अस्सी साल की विधवा मां की सेवा का चित्रण है, तो दूसरे सर्ग में मां-बेटी के बीच प्रेम संबंध एवं प्रकृति चित्रण और तीसरे सर्ग हद-सरहद में भारत और पाकिस्तान की भूमि का चित्रण है। यह उपन्यास कथा लेखन की एक नई छठा है। इसकी कथा का कालक्रम, इसकी संवेदना इसका कहना सब अपने निराले अंदाज में चलते हैं।

गीतांजलि श्री ने कहानियाँ भी लिखी हैं। इनका पहला कहानी संग्रह 'अनुगूंज' है। इसमें सांप्रदायिकता, पारिवारिक जीवन शैली, विवाह संबंध, नारी विमर्श का चित्रण है। दूसरा 'वैराग्य' कहानी संग्रह में पन्द्रह कहानियां संग्रहित हैं। इसमें मानवीय संवेदना, मृत्यु बोध, वृद्ध विमर्श, मध्यवर्ग की त्रासदी, पारिवारिक जीवन आदि विषयों का विवेचन किया गया है। तीसरा 'मार्च, मां और सकुरा' कहानी संग्रह में

बारह कहानियाँ हैं। इसमें सांप्रदायिकता, विदेशी प्रवेश का चित्रण, वृद्ध जीवन की त्रासदी, अकेलापन आदि चित्रण है। 'यहां हाथी रहते थे' कहानी संग्रह में नारी बोध, वृद्धावस्था, प्रकृति वर्णन एवं विदेशी वर्णन आदि का चित्रण है।

गीतांजलि श्री ने स्त्री होने के कारण स्त्री की पीड़ा को समझा और अपने कथा साहित्य के माध्यम से स्त्री जीवन के विभिन्न पक्षों को बारीकी से उकेरा है। इनके कथा साहित्य के नारी पात्र अपने जीवन के संघर्ष से जूझते हैं, लेकिन हार नहीं मानते। अपने जीवन को नए अर्थ देने के प्रयास में निरंतर संघर्ष करते हैं और नई चेतना से सृजित होकर अपने लक्ष्य को पा लेती हैं। गीतांजलि श्री ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से समकालीन परिस्थितियों का सटीक चित्रण किया है। सांप्रदायिक घटना, पारिवारिक समस्या, मानवीय संवेदना, मध्यवर्ग की त्रासदी का प्रभावी चित्रण किया है। नारी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती है और संघर्ष करते हुए आगे बढ़ कर अपनी स्वतंत्र पहचान बनाती है। वह समझ गई है कि स्त्री केवल पुरुष की पूरक नहीं बल्कि उसकी अपनी स्वतंत्र पहचान है। गीतांजलि श्री ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थितियों का उद्घाटन किया है।

- **शोध की आवश्यकता :–**

शोध-कार्य हेतु प्रस्तावित विषय 'गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में युग-यथार्थ' पर शोध की आवश्यकता है। गीतांजलि श्री ने अपने साहित्य में समाज में बढ़ रही सांप्रदायिकता, मध्यम वर्गीय परिवार में रिश्तों में आए टकराव, स्त्री के अस्तित्व की पहचान के लिए संघर्ष तथा मानवीय प्रवृत्तियों पर वैश्वीकरण के प्रभाव को गंभीरता से चित्रित किया है। इन के कथा-साहित्य में पात्र सर्वथा नए जीवन-मूल्यों से अभिप्रेरित होकर नए समाज का सृजन करते हैं। इस तरह गीतांजलि श्री के साहित्य मानव-जीवन के पथ को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित कर रही हैं। ऐसी स्थिति में गीतांजलि श्री के कथा-साहित्य में युग-यथार्थ संवेदनात्मक एवं यथार्थ के धरातल पर उद्घाटित हुआ है। गीतांजलि श्री के कथा-साहित्य में उत्तर पूँजीवादी समाज का सम्यक चित्रण हुआ है।

- **शोध का महत्व :–**

हिंदी कथा-साहित्य में गीतांजलि श्री का साहित्य समृद्ध है। नारी लेखिकाओं में नए तेवर के साथ गीतांजलि श्री उभरकर अपनी लेखनी की विशिष्टता सिद्ध कर चुकी है। हिंदी कथा-साहित्य में गीतांजलि श्री साहित्य के विभिन्न पहलुओं के साथ-साथ उनकी विशिष्टता को भी उजागर करती है जिनमें नारी-जीवन ही नहीं अपितु मानव जीवन के अनछुए पहलुओं को भी अभिव्यक्ति मिली है। रोजमर्रा की समस्या, औपनिवेशिक मूल्यों के तहत पनपता मध्यवर्गीय जीवन, नयी पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी की विचार धारा में मत भेद, हदो-सरहदों को नकारती लाँघती प्रेम गाथा, तथा तीसरे जेंडर के अपरिभाषित रिश्ते आदि विभिन्न संगति-विसंगति को अभिव्यक्त किया गया है। भूमंडलीकरण के प्रभाव एवं मानव-समाज की बदलती मानसिकता का आइना गीतांजलि श्री का साहित्य है। प्रस्तुत शोध कार्य समाज के समक्ष न केवल नयी दृष्टि विकसित करेगा अपितु समाज हित के लिए शोध कार्य उपयुक्त भी होगा।

- **पूर्वकृत शोध-कार्य :–**

प्रस्तुत विषय पर पूर्व में हुए शोध कार्यो पर दृष्टि पात करने पर यह ज्ञात हुआ है कि गीतांजलि श्री के साहित्य को लेकर विभिन्न विश्वविद्यालय में निम्नांकित शोध कार्य हुए है–

1) गीतांजलि श्री का कथा साहित्य: एक मूल्यांकन– शोधकर्ता- चोथे सारिका, मार्गदर्शक- सखारे सुनीता, एस० एन० डी० टी० महिला विश्वविद्यालय, (मुंबई) महाराष्ट्र
2) गीतांजलि श्री के कथा-साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन, शोधकर्ता– पुरोहित विभा, मार्गदर्शक– मनोज पांडे, मोहन लाल सुखड़िया विश्वविद्यालय, (उदयपुर) राजस्थान
3) गीतांजलि श्री कृत अनुगूँज कहानी-संग्रह में स्त्री जीवन का यथार्थ, शोधकर्ता– कौर सिमरजीत, मार्गदर्शक– गुप्ता ज्ञानी देवी, गुरु काशी विश्वविद्यालय, (तलवंडी साबो) पंजाब

4) गीतांजलि श्री के कथा-साहित्य में स्त्री, शोधकर्ता– निमबलकर के०एम०, मार्गदर्शक– सरवे वी०डी०, शिवाजी विश्वविद्यालय, (कोल्हापुर) महाराष्ट्र

उपयुक्त तथ्यों के आलोक में यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि गीतांजलि श्री के कथा-साहित्य में युग-यथार्थ पर कोई शोध-कार्य नहीं हुआ है।

- **आधार ग्रंथ सूची:**

- माई, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली– 1993
- हमारा शहर उस बरस, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली– 1998
- खाली जगह, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली– 2001
- तिरोहित, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली– 2006
- रेत समाधि, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली– 2018
- अनुगूंज, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली– 1991
- वैराग्य, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली–1999
- मार्च, मां और साकुरा, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली– 2008
- यहां हाथी रहते थे, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली– 2012
- प्रतिनिधि कहानियाँ, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली– 2015

- **शोध प्रविधि:**

प्रस्तावित शोध कार्य में मुख्य रूप से विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक आलोचनात्मक पद्धतियों के साथ ही तुलनात्मक एवं समाजशास्त्रीय पद्धतियों का भी प्रयोग किया जाएगा। संबंधित लेखकों से विचार विमर्श के साथ-साथ साक्षात्कार प्रणाली आदि शोध प्रविधियों का समुचित प्रयोग करते हुए शोध कार्य को सार्थक बनाने का प्रयास रहेगा।

- **परिकल्पना**

गीतांजलि श्री हिंदी कथा-साहित्य की स्थापित कथाकार हैं। उनके साहित्य में वर्तमान समय के यथार्थ की झलक पायी जाती है। समाज में बढ़ रही सांप्रदायिकता, मानवीय विघटन, मूल्यों का पतन, मध्यम वर्गीय परिवार में रिश्तो में आए टकराव, स्त्री अस्मिता तथा वैश्वीकरण को केन्द्र में रखकर रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। इसीलिए गीतांजलि श्री के कथा साहित्य के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन कर निम्न बिन्दुओं पर प्रकाश डाला जाएगा।

- गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में नारी जीवन से जुड़ी समस्याओं का उद्घाटन करना
- गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में आए विभिन्न पात्रों का सम-सम्मयिक परिवेश में मूल्यांकन
- गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में मध्यवर्गीय परिवारों की समस्याएं एवं सामाजिक चेतना को वैज्ञानिक मूल्यों से अन्वेषित करना।
- गीतांजलि श्री का समकालीन लेखिकाओं के संदर्भ में सृजन कला की विशिष्टताओं को उद्घाटित करना।
- गीतांजलि श्री के कथा साहित्य की शिल्पगत विशेषताओं का अध्ययन करना।

- **प्रस्तावित शोध प्रारूप निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित होगा–**

प्रथम अध्याय : गीतांजलि श्री के कथा-साहित्य का सिंहावलोकन

द्वितीय अध्याय : गीतांजलि श्री का समय

तृतीय अध्याय : गीतांजलि श्री की रचनाओं का यथार्थ

चतुर्थ अध्याय : गीतांजलि श्री के कथा साहित्य का शिल्प

पंचम अध्याय : गीतांजलि श्री के कथा-साहित्य का वैशिष्ट्य

- **प्रस्तावित संदर्भ ग्रंथों की सूची :–**

- माई, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली– 1993
- हमारा शहर उस बरस, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली– 1998
- खाली जगह, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली– 2001
- तिरोहित, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली– 2006
- रेत समाधि, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली–2018
- अनुगूंज, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली– 1991
- वैराग्य, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली– 1999
- मार्च, माँ और साकुरा, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली– 2008
- यहाँ हाथी रहते थे, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली– 2012
- प्रतिनिधि कहानियाँ, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली– 2015
- महिला सशक्तिकरण एवं वैश्वीकरण, डॉ० ज्ञान प्रकाश गौतम, कला प्रकाशन, वाराणसी, 2009
- हिन्दी कथा साहित्य : एक दृष्टि, सम्यकेतु सांकृत, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
- कहानी: वस्तु और अंतर्वस्तु, शंभु गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
- भूमंडलीकरण और हिन्दी उपन्याय, पुष्पपाल सिंह, राधाकृष्ण, प्रकशन, नई दिल्ली, 2015
- आधुनिक और हिन्दी उपन्यास, इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
- हिन्दी उपन्यास का स्त्री-पाठ, रोहिणी अग्रवाल, राजकमलन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
- हिन्दी गद्य साहित्य रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2016

- कहानी: अनुभव और अभिव्यक्ति, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2000
- हिन्दी कहानी का विकास मधुरेश, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण, 2011
- हिन्दी उपन्यास का विकास मधुरेश, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद, पंचम संस्करण-2011
- कहानी की संवेदनशीलता सिद्धांत और प्रयोग, डॉ० भगवानदास वर्मा, प्रथम प्रकाशन, कानपुर, संस्करण-1972
- कहानी नयी कहानी डॉ० नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-2009
- हिन्दी साहित्य कोश, भाग-1 तथा भाग-2 डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, सं0-2013
- हिन्दी साहित्य का इतिहास संपादक डॉ० नगेन्द्र, डॉ० हरदयाल, मयूर पेपर बैक्स, दिल्ली, सं0-2012
- हिन्दी गद्य पर्व : नामवर सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2015
- हिन्दी कहानी यथार्थवादी नजरिया: मार्कण्डेय, लेखभारती प्रकाशन, दिल्ली, 2015
- हिन्दी कहानी का इतिहास-1 : गोपालराय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली. प्रथम सस्वरण-2010
- हिंदी गद्य प्रकृति और रचना सन्दर्भ, डॉ० रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

कोश ग्रंथ सूची–

- लोक भारती प्रामाणिक हिंदी कोश– रामचन्द्र वर्मा
- लोक भारती हिंदी मुहावरे और लोकोक्ति कोश– बदरीनाथ कपूरी

पत्र–पत्रिकाएँ

- हंस
- कथा–देश
- वागर्थ
- आलोचना
- तद्भव

शोध निर्देशक

प्रो० (डॉ०) चन्द्रभानु प्रसाद सिंह
प्राचार्य एवं पूर्व विभागाध्यक्ष
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधार्थी

कंचन रजक
पैट क्रमांक- E2209065
पिता– संतोष रजक
ग्राम– बड़ी मिसिया, पो०+थान– सरमेरा
जिला– नालंदा (बिहार)